B.K.DD

प्रातः क्लास 8-1-69 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

बाप समझते हैं बच्चों की बुधि में यह जरूर होगा कि बाबा, बाप है, टीचरहै, सुप्रीमगुरु है। इस याद में ... र होंगे। यह याद कब कोई सिखला भी नहीं सकते। कल्प कल्प बाप ही आकर सिखलाते हैं। वही ज्ञान सागर ... तित-पावन भी है। वह बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। यह अभी समझाया जाता है जब कि ज्ञान का ... सरा नेत्र दिव्य बुधि मिला है। बच्चे भल समझते तो होंगे परन्तु बाप को ही भूल जाते हैं तो टीचर गुरु ... र कैसे या आवेंगे। माया बहुत ही प्रबल है। जो तीन रूपों में महिमा होते हुये भी तीनों को भूला देती है। ... तनी सर्वशक्तिवान है। बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। और भी 5-6 सेन्टेंसुदस हो तो भी भूल ... ये। माया ऐसी प्रबलहै। ड्रामा अनुसार है बहुत सहज। बच्चे समझते हैं ऐसा कब कोई हो नहीं सकता। वही ... प -शिक्षक सद्गुरु है सच्च2 । इसमें गपोड़े आदि की बात नहीं। अन्दर में समझना चाहिए परन्तु माया भूला ... ती है। कहते हैं हम हार खाते हैं। यू तो कदम2 पर तुम्हारी पदम है। परन्तु हार खाते हैं तो पदम कैसे होंगी ... वताओं को ही पदम की निशानी देते हैं। सभी को तो नहीं दे सकते। यह ईश्वर की पढाई है। मनुष्य की ... ह पढ़ाई कब हो नहीं सकती। भल देवताओं की महिमा की जाती है परन्तु फिर भी ऊंच ते ऊंच एक बाप है। ... की उनकी पढ़ाई क्या है। आज ~~मक्खी~~ आज गदहाईकल फिर राजाई। अभी तुम पुरुषार्थ कर यह बन रहे हो। ... नते हो इस पुरूषार्थ मे फेल बहुत होते हैं। पढ़ाई फिर भी इतनी ही है। जितने कल्प पहले पास हुये थे ... तब मे ज्ञान है भी बहुत सहज। परन्तु माया भूला देती है। बाप कहते हैं अपना चार्ट लिखो। परन्तु लिख ... हीं पाते हैं। कहां तक बैठ लिखें। अगर लिखते भी हैं तो जांच करते हैं दो घंटा ड्राईस्ट। वह भी उन्हों को ... लूम पड़ता है जो बाप के श्रीमत को अमल में लाते ~~हैं~~x हैं। बाप तो समझेंगे इन विचारों लज्जा आती होगी ... हीं तो श्रीमत अमल में लानी चाहिए। परन्तु ~~9%~~x 1%, 2% भी मुश्किल लिखते हैं। श्रीमत का इतना रिगार्ड ... बच्चों में। मुरली मिले तभी नहीं पढ़ते हैं। सो भी अच्छे2 महारथी। उन्हों को दिल में लगता जरूर होगा बाबा ... हते तो सच्च हैं हम मुरली नहीं पढ़ते हैं तो बाकी औरों को सिखलावेंगे क्या। (याद की यात्रा)

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं बरोबर हम आत्मा हैं ... मको परम पिता परमात्मा पढ़ा रहे हैं। और क्या कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनो। इस ... बाप भी आ गया, पढ़ाने वाला भी आ गया, सद्गति दाता भी आ गया। थोड़े2 अक्षर में सारा ज्ञान आ जा... । यहां तुम आते ही हो इसको रिवाईज करने लिये। बाप भी यही समझाते हैं। क्योंकि तुम खुद कहते हो हम ... भूल जाते हैं। इसलिये यहां आते हैं रीवाईज करने। भल कोई रहते भी हैं तो भी रिवाईज नहीं होता है। तकदी... में न हैं। तदबीर तो बाप कराते हैं। तदबीर कराने वाला एक ही बाप है। इसमें कोई के पास खातरी भी नहीं ... हो सकती। न एकट्ठा पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई मे तो ~~इक~~ एकट्ठा पढ़ने लिये टीचर को बुलाते हैं। यह तो तकदीर बनाने लिये सभी को एकरस पढ़ाते हैं। एकएक को अलग कहां तक पढावेंगे। कितने ढेर बच्चे हैं। उस पढ़ाई में कोई बड़ आदमी के बच्चे होते हैंअफोर्ड कर सकते हैं तो उनको ~~इ~~ एकट्ठा भी पढ़ाते हैं। टीचर जानते हैं कि ... डलहै सह= इसलिये पढ़ाकर उनको स्कालरशिप लायक बनाते हैं। यह बाप ऐसे नहीं करते हैं। यह तो सभी ... एकरस पढ़ाते हैं। वह हुआ टीचर का एकट्ठा पु० कराना। यह तो एकट्ठा पु० किसको अलग कराते नहीं हैं। एकट्ठा पु० माना ही टीचर कुछ कृपा करते हैं। भल ऐसे देसे लेते हैं। खास टाईम दे पढ़ाते हैंजिससे वह जास्ती पढ़कर होशियार होते हैं। यहां तो जास्ती कुछ पढ़ने की बात ही नहीं। इनकी तो बात ही एक है। एक ही महामंत्र देते हैं। मन्मनाभव का। याद से क्या होता है यह तो समझते हो। बाप ही पतित-पावन हैजानते हैं उनको याद करने से हम पावन बनेंगे। अभी तुम बच्चों के हाथ है। जितना याद करेंगे उतना ही पावनबनेंगे यह तो तुम बच्चों के पुरूषार्थ पर है। बेहद के बाप को याद करने से हमको यह (ल०ना०) बनना है। इन्हों ... महिमा तो हरेक जानते हैं। कहते भी हैं आप पुण्यात्मा हो। हम पापात्माएं पतित हैं। ढेर मंदिर बने हुये हैं वहां सभी क्या करने जाते हैं। दर्शनसे फायदा कुछ भी नहीं। एक दो को देखकर चले जाते हैं। बस

8-1-69

नि करने जाते हैं। फ्लाने यात्रा पर जाते हैं। हम भी जावें। इससे होगा क्या। कुछ भी पता नहीं। तुम बच्चों ने बहुत ही यात्रायें की हैं। परन्तु नतीजा क्या हुआ है तुम और ही नीचे गिरते गये हो। यात्रा किसलिये हैं इससे क्या मिलेगा कुछ भी पता नहीं हैं। जैसे और त्योहार आदि मनाते हैं, वैसे यात्रायें भी एक त्योहार समझते हैं। अभी तुम याद की यात्रा मे रहते हो। अक्षर ही एक है मन्मनाभव। यह तुम्हारी यात्रा अनादि हैं। वह कहते हैं यह यात्रायें हम अनादि करते आये हैं। अभी तुम ज्ञान सहित कहते हो हम कल्प2 यह यात्रा करते हैं। बाप ही आकर यह यात्रा सिखलाते हैं। वह चारो धाम जन्म व जन्म यात्रा करते हैं। यहां तो बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। ऐसे तो और कोई कब कहते नहीं हैं कि यात्रा से पावन बनेंगे। मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो उस समय पावन रहते हैं। आजकल तो वहां भी गन्द ... पावन नहीं रहते। हरिद्वार आदि तरफ जाओ तो वहां भी वेश्यायें बैठी हैं। बहुत पंडे जाते है, यात्रु को ... जाते हैं। इसके साथ फिर वह भी यात्रा(विकार मे गिरने की) कराते हैं। जिससे एकदम बेरा ही गर्क हो जाता है। महात्माओं का वहां झुण्ड रहता है। बाबा ने सुना है कंखर जैसे वेश्यालय है। इस रूहानी यात्रा का तो किसको भी पता नहीं हैं। तुमको अभी बाप ने बताया है। यह सच्ची2 याद की यात्रा है। वह यात्रा का चक्र लगाने जाते फिर वैसे का वैसे ही बन जाते हैं। चक्र लगाते रहते हैं। जैसे वासगोटी गम्मा ने सृष्टि का चक्र लगाया। यह चक्र लगाते हैं ना। गीत भी है ना चारो तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे। भक्ति मार्ग में तो कोई मिल नहीं सकते। भगवान कोई को भी मिला नहीं। भगवान से दूर ही रहे। फेरी लगाकर फिर भी घर में आकर विकारों मे फंसते हैं। वह सभी यात्रायें हैं झूठी। अभी तुम बच्चे जानते हो यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि बाप आये हैं। एक दिन सभी जान जावेंगे बाप आया हुआ है। भगवान आखरीन मिलेंगे कैसे। यह तो कोई भी जानते नहीं। कोई तो समझते हैं फुले में मिलेगा। इनमें भी भगवान है। तब तो ले जाते हैं। जो कुछ कहते, जो करते सभी झूठ। झूठ खाना, झूठपीना। झूठही झूठ है। यह है ही झूठ खण्ड। सच्च खण्ड स्वर्ग को कहा जाता है। भारत ही स्वर्ग था। स्वर्ग मे भारतवासी ही थे। इसलिये भारतवासी ही स्वर्गवासी, फिर भारतवासी ही नर्कवासी बनते हैं। और किसकी हम भेंट नहीं करते हैं। वह तो स्वर्ग वासी ही नहीं बनते। यह तुम मीठे2 बच्चे जानते हो हम श्रीमत पर इस भारत को फिर से स्वर्ग बना रहे हैं। भारत का ही तुम नाम लेंगे। उस समय और कोई धर्म होता ही नहीं। सारी विश्व पवित्र बन जाती है। अभी तो ढेर धर्म हैं। बाप आकर सारी झाड़ का नालेज सुनाते तुमको स्मृति दिलाते हैं। तुम सो देवता थे सो फिर क्षत्री सो वैश्य सो शुद्र बने। अभी तुम सो ब्राह्मण बने ऐसे अक्षर कब कोई सन्यासी उदासी विद्वान द्वारा सुने हैं? नहीं। यह हम सो का अर्थ बाप कितना समझाते हैं। सोहम अर्थात मैं आत्मा फिर हम आत्मा ऐसे चक्र लगाती हैं। वह तो कह देते हम आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो हम आत्मा। एक भी नहीं जिसको हम सो का अर्थ मालूम हो। तो बाप कहते हैं यह जो मंत्र है यह ... याद रहना चाहिए। चक्र बुधि में न होगा तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। हम आत्मा अभी ब्राह्मण हैं। हम सो देवता बनेंगे .... यह तुम कोई से भी जाकर पूछो कब नहीं बतावेंगे। वह तो 84 का अर्थ भी नहीं समझते हैं। भारत का उत्थान और पतन गाया जाता हैं। यह ठीक है। सतोप्रधान, सतो रजो तमो, सूर्यवंशी चन्द्रवंशी वैश्यवंशी शुद्रवंशी। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ गया है। बीज रूप बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता हैं। वह इस चक्र मे नहीं आते हैं। ऐसे नहीं हम जीवात्मा सो परमात्मा बन जाते हैं। नहीं। बाप आप समान गुलफुल बनाते हैं। प्र आप समान बाप नहीं बनाते। इन बातों को बहुत अच्छी रीत समझना है। तब ही बुधि में चल सकता हैं। जिसका नाम नाम ~~स्व~~ स्वदर्शनचक्रधारी रखा है। तुम बुधि से ~~सम~~ समझ सकते हो। हम कैसे 84के चक्र मे आते हैं। इसमें सभी आ जाते। समय भी आ जाता वर्ण भी आ आजाता वंशावली भी आ जाती तुम बच्चों की बुधि मे यह सारा ज्ञान होना चाहिए। नालेज से ही ऊंच पद मिलता है। नालेज होंगी तो कौ भो देंगे। यहां तुमसे कोई पेपर आदि नहीं भराई जाती है। उन स्कूलों मे जब इम्तहान होते है तो पेपर्स

विलायत से आते हैं। वह सभी से भराई जाती है। जो विलायत में पढ़ते होंगे उन्हों का तो वहां ही रिजल्ट निकालते होंगे। उनमें भी कोई बड़ा एड्युकेशन मिनिस्टर होगा जो जांच करते होंगे पेपर्स की। तुम्हारी पेपे की जांच कौन करेंगे? तुम खुद ही करेंगे। खुद को जो चाहिए सो बनाओ। पुरुषार्थ से जो चाहो सो पद बाप से लो। प्रदर्शनी आदि में बहुत लिखाते है ना तुम क्या बनेंगे? देवता बनेंगे बैरीस्टर बनेंगे, क्या बनेंगे? जितना बाप को याद करेंगे सर्विस करेंगे उतना ही फल मिलेगा। जो अच्छी रीत बाप को याद करते हैं वह समझते हैं हमको सर्विस भी करनी है। प्रजा बनानी है ना। यह राजधानी स्थापन होरही हैं। तो उसमें सभी चाहिए। वहां वजीर आदि होते ही नहीं। वजीर की दरकार उनको रहती है जिनकी अक्ल कम होतो है। तुमको वहां राय की दरकार नहीं रहती। बाप के पास राय लेने आते हैं। स्थूल बातों की राय लेने आते हैं, पैसे का क्या करें, धंधा कैसे करें। बाबा ... बाप कहते हैं यह दुनियावी बातें बाप के पास नहीं ले आओ। हां कहां दिल शिकस्त न हो जाये तो कुछ ... आथत देकर बता देते हैं। यह कोई मेरा धंधा नहीं। मेरा तो ईश्वरीय धंधा है तुमको रास्ता बताने का कि तुम विश्व का मालिक कैसे बनो। तुमको मिलती है श्रीमत। वह सभी है आसुरी मत। सतयुग में कहेंगे श्रीमत। कलियुग में आसुरी मत। वह है सुखधाम। वहां ऐसे भी नहीं कहेंगे राजी खुशी हो? तबीयत ठीक है। यह अक्षर वहां होते ही नहीं। यह यहां पूछा जाता है। कोई तकलीफ तो नहीं हैं। राजी खुशी हो। इसमें भी बहुत बातें आ जाती हैं वहां दुःख है ही नहीं जो पूछा जाये। यह है दुःख की दुनिया। वास्तव में तुम से कोई ऐसे पूछ नहीं सकते। भल माया गिराने वाली है तो बाप भी मिला है ना तो कहेंगे क्या तुम खुश खैरीयत भी पूछते हो? हम ईश्वर के बच्चे हम क्या खुश खैरीयात पूछते हो। प्रवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की वह मिल गया फिर किसकी प्रवाह। यह हमेशा याद करना चाहिए। हम किसके बच्चे हैं। यह भी बुधि में ज्ञान है जब तक हम पावन बन जावेंगे, तो फिर लड़ाई शुरु हो जावेगी। तुम से पूछेंगे जरूर। परन्तु तुम कहेंगे हम तो सदैव राजी हैं बिमार भी हो तो भी याद में हो तो स्वर्ग से भी यहां जास्ती राजी हो। जब कि स्वर्ग की बादशाही देने वाला हमको बाप मिला हैं जो हमको इतना लायक बनाते हैं। हमको क्या प्रवाह हैं। ईश्वर की बच्चों की प्र... वहां देवताओं को भी प्रवाह नहीं। देवताओं के उपर तो है ईश्वर। तो ईश्वर के बच्चों की क्या प्रवाह हो सकते हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं, बाबा हमारा टीचर है, सद्गुरू हैं। बाबा हमारे उपर तख्त रख रहे हैं ताजधारी बन रहे हैं। तुम जानते हो कि हमको विश्व का ताज कैसे मिलता हैं। बाप नहीं ताज रखते हैं। ... भी तुम जानते हो सतयुग में बाप अपना ताज बच्चे पो रखते हैं। जिसको ईंगलिश में कहते हैं क्राउन ... बाप का ताज बच्चा पहनेगा। तब तक आश रहेगा कहां बाप मरे तो ताज हमारे उपर आवे। बाबा का सुना ... हैएडवर्ड बूढ़ा हुआ, कहे बाप कब मरेगा जो हमको ताज मिलेगा। फिर गुप्त गोली मार दी। जब प्रजा ... को मारती है अपना वरसा लेने तो कोई राजा के बच्चे ने मारा तो नई बात थोड़ेही हैं। आश होंगी प्रिन्स महाराजा तो बनूं। वहां तो ऐसी बात कोई होती नहीं। अपने समय पर कायदे अनुसार बाप बच्चों को देकर किनारा कर लेते हैं। वहां वानप्रस्त की चर्चा होती ही नहीं। बच्चों को महल आदि बना ही देते हैं। आशाएं पूरी हो जाती हैं। तुम समझ सकते हो सतयुग में सुख ही सुख है। प्रैक्टीकल में वह सुख तब पावेंगे जब ... वह तो तुम्ही जानो। स्वर्ग में क्या होगा। एक शरीर छोड़ फिर हम कहां जावेंगे। अभी तुमको प्रेक्टीकल में ... पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो सच्च2 हम स्वर्ग में जावेंगे। वह तो इतने एडीयट हैं जो कहदेते हैं हम स्वर्ग जाते हैं। पता भी नहीं स्वर्ग किसको नर्क किसको कहा जाता हैं। दुनिया की लाखों बर्ष आयु दे दी है। सत... त्रेता की आयु ईतनी, द्वापर की आयु ईतनी फिर सभी को मिलाकर हिसाब कितना क्लीयर है। वह मुढमति मनुष्य कह देते हैं लाखों बर्ष है। फिर मनुष्य की 84 लाख योनियां हैं। जन्म जन्मान्तर यह ज्ञान की बातें गिरते ही आये हैं। अभी तुम्हारी बुधि में है हम कहां से कहां आकर गिरे हैं। गिरावट ही गिरावट है। बाकी युग त्रेता में हैं पवित्र। तो वहां बहुत सुख है। अच्छा बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग